R.K.

GROUP OF COLLEGE

Behind Kalwar Police Station, Kalwar, Jaipur (Raj.)

ASSIGNMENT

R.K. VIGYAN P.G. MAHAVIDHYALAYA

Affiliated to University of Rajasthan, Approved by Govt. of Raj.)

Kalwar Road, Kalwar, Jaipur (Raj.)

Website : rkgroupofcollege.com , Mob. No. : 9314501146

E-mail : hrshreebalajieducationsamiti@gmail.com

B.A. / B.Sc. / B.Com.

ASSIGNMENT WORK / MIDTERM TEST

Session 2024 - 2025.

Semester ....

Name of Student राहुल प्रजापति Father's Name ....

Roll No. .... Enrollment No. ....

Year .... Semester ....

प्रश्न 1 निम्नलिखित मे से कोई दो पल्लवन कीजिए DATE

(क) जाके पांव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई
(ख) पराधीन सपनेहु सुख नहीं
(ग) हानि- लाभ, जीवन- मरण, यश- अपयश, विधि हाथ
(घ) अपयश का भय सबसे बडा भय है।

(क) जाके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई
उत्तर बिवाई एक रोग है जिसमे (पैरो की) एडियां फट जाती है ऐसा होने पर असहनीय पीडा होती है ऐसे मे मनुष्य प्रायः अपनी नियमित और आवश्यक गतिविधियां करने मे भी असमर्थ हो जाता है। दुर्भाग्यवश ऐसी वेदना अधिकांशतः श्रमजीवी किसानो और मजदूरो को ही सहनी पडती है, नंगे पाव काम करना इनकी मजबूरी होती है धूल, मिट्टी या अन्य गंदगी के पडने से बिवाई के घावो की पीडा और भी बढ जाती है। परन्तु फिर भी यह अभागे कार्य करते रहते है। क्योकि यदि यह कार्य नही करेंगे तो इनके घर चुल्हा भी नही जलेगा। ऐसे लोगो कि इस विवशता पीडा या व्यथा का अनुभव मात्र उनकी अवस्था के अवलोकन या कल्पना से नही लगाया जा सकता। ऐसे लोगो मे संवेदनशीलता का स्वतः विकास होता है जो समाज मे पारस्परिक सौहार्द की भावना पैदा करती है परन्तु यदि किसी ने ऐसी व्यथा की कभी अनुभूति ही न की हो तो वे ऐसे लोगो की व्यथा को भला कैसे समझ सकेंगे।

(ख) पराधीन सपनेहु सुख नाही।

उ० मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इस कारण यह अनुशासन परम्परागत मान्यता, संस्कार दायित्व -- प्रभृति अनेक ऐसे बंधनो से बंधा हुआ है जिन्हे स्वीकार करना उसकी मजबूरी कही जा सकती है। परन्तु यह बंधन उसकी केवल उन गतिविधियों पर रोक लगाते है जो उसे बुरी तरह स्वार्थी तथा अमानवीय आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। अन्यथा इनकी व्यवस्था का मूल उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तिगत के विकास मे सुयोग ही देना है। अतः इनके बंधन मे बंधा हुआ व्यक्ति अपनी क्षमता की सुनियोजित उपयोग कर अपनी इच्छा आकांक्षा या महत्वाकांक्षा की सहज पूर्ति कर सकता है। इसके विपरीत व्यक्ति पराधीन होते है हुए ही अपने इस प्रकार के सारे अधिकारो से हाथ धो बैठते है गुलाम व्यक्ति अपने इच्छा अनिच्छा तो दूर किसी अनुचित प्रसंग पर अपना विरोध तक व्यक्त करने का अधिकार खो बैठता है। ऐसे व्यक्ति सर्वथा क्रूर, संवेदनाशून्य और नितान्त स्वार्थी होते है जो गुलाम या पराधीन व्यक्ति का व्यापक शोषण करते है। फलतः गुलाम व्यक्ति की सुख शांति की चाहत एक आधारहीन कल्पना बनकर रह जाया करती है। इसी कारण पराधीनता को एक बहुत बड़ा अभिशाप मानते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने स्वाधीनता के महत्व का प्रतिपादित करते है।

प्रश्न 2) संधि को परिभाषित करते हुए उनके भेदो की विवेचना कीजिए

उत्तर हिंदी भाषा मे संधि का अर्थ दो वर्णो का मेल है। जब दो वर्ण परस्पर मिलते है तो एक नये वर्ण की रचना होती है उसे संधि कहा जाता है। उदाहरण के लिए - विद्यालय। शब्द (विद्या + आलय) से मिलकर बना है। इसमे विद्या वर्ण "आ" और आलय का "आ" मिलकर "आ" हो गया। (आ + आ) अर्थात् दो वर्णो के परस्पर मिलने से वर्णो का बदला हुआ रूप ही संधि है

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होते है 1 स्वर संधि, 2 व्यंजन संधि, 3 विसर्ग संधि।
इन पर क्रमशः विचार किया जायेगा।

1 स्वर संधि :-

निकटवर्ती दो स्वरो के मिलने से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहा जाता है। स्वरो के परस्पर संयोग से विविध प्रकार के विकार होते है। इन्ही के आधार पर स्वर संधि के पांच प्रकार है -

1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3 वृद्धि संधि
4. यण संधि 5. अयादि संधि

(क) दीर्घ संधी →

यदि अ तथा आ के बाद अ या आ आता है तो आ हो जाता है यदि इ या ई के बाद इ या ई आता है तो ई हो जाता है। और यदि उ और ऊ के बाद उ या ऊ आता है तो ऊ हो जाता है।

अर्थात अ, आ + अ, आ ⇒ आ , इ, ई + इ, ई ⇒ ई
उ, ऊ + उ, ऊ ⇒ ऊ यथा -

1. सुख + अन्त ⇒ सुखान्त (अ + अ = आ)
2. छात्र + आवास ⇒ छात्रावास (अ + आ = आ)

(ख) गुण संधी :-

गुण संधी मे यदि अ या आ के बाद इ या ई आता है तो उसके स्थान पर ए हो जाता है। यदि अ या आ के बाद उ या ऊ आता है तो उसके स्थान पर ओ हो जाता है यदि अ या आ के बाद ऋ आता है तो उसके स्थापन पर अर हो जाता है।

अर्थात 1. अ, आ + इ, ई = ए
2. अ या आ + उ, ऊ = ओ
3. अ या आ + ऋ = "अर"

उदाहरणार्थ -
1. देव + इन्द्र = देवेन्द्र (अ + इ = ए)
2. सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र (अ + इ = ए)
3. महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य (आ + ए = ए)

(घ) यण संधी :-

यदि यण संधी मे इ, ई, उ, ऊ, ऋ के पश्चात कोई अन्य स्वर आता है तो इ, ई, के स्थान पर "य" हो जाता है उ, ऊ के स्थान पर व हो जाता है अर्थात ऋ के स्थान पर र हो जाता है अर्थात

1. इ, ई + अन्य स्वर = 'य'
2. उ या ऊ + अन्य स्वर = 'व'
3. ऋ + अन्य स्वर = 'र'

उदाहरणार्थ -

1. इति + आदि = इत्यादि (इ + आ = या)
2. वि + असन = व्यसन (इ + अ = य)

(ङ) अयादि संधी :-

अयादि संधी मे ए, ऐ, ओ, औ का किसी स्वर से मेल होने पर ए = अय, ऐ = आय, ओ = अव, औ = आव हो जाता है अर्थात ए + अ = अय, ऐ + अ = आय, ओ + अ = अव, औ + अ = आव

उदाहरणार्थ ⇒

1. ने + अन = नयन (ए + अ = अय)
2. चे + अन = चयन (ए + अ = अय)

स्वर संधी के अलावा दो संधीया = 1. व्यंजन संधी 2 विसर्ग संधी प्रायः संस्कृत मे प्रयुक्त

DATE ....

होती है लेकिन हिंदी भाषा मे भी उनका प्रयोग होता है। अतः यहा इन पर विचार किया जा रहा है।

2. व्यंजन संधि :-

जब समीप आने वाले दो वर्णो मे से पहला वर्ण व्यंजन हो और दूसरा स्वर अथवा व्यंजन हो तो उनमे होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहा जाता है। संस्कृत मे इसे हल संधि कहा जाता है इसके नियम निम्नलिखित है।

वाक + ईश = वागीश   वाक + ऐतिहासिक = वैतिहासिक
सत + वाणी = सद्वाणी   षट + दर्शन = षड्दर्शन

वाक + मय = वाड्मय   जगत + माता = जगन्माता
जगत + नाथ = जगन्नाथ   उत + नयन = उन्नयन

अहम + कार = अहकार   सम + गम = संगम
उत + लास = उल्लास   उद + लिखित = उल्लिखित
सत + जन = सज्जन   जगत + जननी = जगज्जननी
उत + श्वास = उच्छवास   उत + शिष्ट = उच्छिष्ट

3. विसर्ग संधि ⇒

विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार या परिवर्तन आता

DATE

है इसे विसर्ग संधि कहते हैं अर्थात किसी शब्द के अंत में विसर्ग ध्वनि आती है तथा उसके बाद में आने वाले शब्द के स्वर या व्यंजन का मेल होने के कारण जो ध्वनि विकार उत्पन्न होता है वही विसर्ग संधि है। विसर्ग से संबंधित कुछ नियम निम्नलिखित है।

मनः + अविराम = मनोविराम
मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा
मनः + विकार = मनोविकार
यशः + अभिलाषा = यशोभिलाषा

तिरः + कार = तिरस्कार
भाः + कार = भास्कर

प्रश्न3) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र को कीजिए।

(क) सरकारी पत्र
कार्यालय पत्र प्राचार्य राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धौलपुर (राज.)

(ख) अर्द्ध सरकारी पत्र
कार्यालय - प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, धौलपुर (राज.)

1. सरकारी पत्र

कार्यालय :- प्राचार्य- राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धौलपुर (राज.)

पत्रांक : रासनामधौ / छात्रसंघ / 2001-200/1575 दिनांक 3/2/2001

सेवा में,
पुलिस अधीक्षक
धौलपुर राज.

विषय => महाविद्यालय के छात्र संघ चुनाव में कानून व्यवस्था बनाए रखने के क्रम में

महोदय,
उक्त विषय में सूचित कर लेख है कि महाविद्यालय में सत्र 2001-2002 के लिए छात्रसंघ का चुनाव सलंग्न कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न होने जा रहा है। इस बार स्थानीय लोगों की दिलचस्पी के कारण छात्र- छात्राओं के मध्य उत्साह के साथ- साथ उत्तेजना का वातावरण भी निर्मित हो गया है कोई छोटी सी बात भी बड़े विवाद का कारण बन जाती है।
अतः आग्रह है कि सलंग्न कार्यक्रमानुसार महा

DATE

विद्यालय परिसर के छात्रों की गतिविधियों पर नजर रखने तथा उन्हें नियंत्रित करने के लिए समुचित पुलिस - बल तैनात करने की कार्यवाही सम्पन्न करावें।

भवदीय
हस्ताक्षर
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
धौलपुर (राज).

प्रश्न 4) संक्षेपण कीजिए

(क) साहित्यकार का काम केवल पाठकों का मन बहलाना या मनोरञ्जन करना मात्र नहीं है यह कार्य तो भाट और मदारी तथा विदूषक और मसखरे किया करते हैं। साहित्यकार का कर्तव्य इनसे कहीं बहुत ऊँचा होता है। वह हमारा पथ-प्रदर्शक होता है, हमारे मनुष्यत्व को जगाता है हममें सद्भावों का संचार करता है। हमारी मानवीय दृष्टि का प्रसार करता है। साहित्यकार का काम केवल यही उद्देश्य होना चाहिए इस मनोरथ को सिद्ध करने के लिए जरूरत है कि उसके चरित्र 'पाजीटिव' हो, जो प्रलोभनों के आगे सिर न झुकायें बल्कि उनको परास्त करे, जो वासनाओं के पंजे में न फँसे बल्कि उनका दमन करे, जो किसी विजयी सेनापति की भाँति शत्रुओं का संहार करके विजय-नाद करते हुए निकले

प्रश्न - i) उपर्युक्त गंद्याश का उचित शीर्षक लिखिए।

उ० उपर्युक्त गंद्याश का उचित शीर्षक 'साहित्यकार की रचनाधार्मिता'

ii) उपयुक्त गंद्याश का संक्षिप्तीकरण कीजिए

उ० भाँडो, मदारियो, विदुषको या मसखरो की भाँति साहित्यकार का काम मन बहलाना या मनोरंजन मात्र नहीं। वह हम मे मनुष्यत्व जगाकर सद्भावो का संचार कर मानवीय प्राणि का प्रसार कर हमारा मार्ग दर्शन करता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु जरूरी है कि वह पाशविक चरित्र ले ज्यो प्रलोभनो, वासनाओ तथा शत्रुओ का दमन एवं संहार करे।

iii) साहित्यकार हमारा पथ-प्रदर्शक होता है, कैसे ? उक्त गंद्याश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ० साहित्यकार हमारे उन मानवीय गुणो को जाग्रत और उद्देलित करता है जिनके सहारे हम परस्पर समरसता एवं समन्वय स्थापित कर विकास पथ पर अग्रसर होते है। इतना ही नहीं वह ऐसे मानवीय संदर्भो के दमन एवं विसंगतियो के संहार की प्रेरणा भी देता है जो मानवता के विकास पथ पर बाधा उपस्थित करते है इसलिए साहित्यकार को हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शक भी कहा जा सकता है

DATE

(iv) 'पाथीटिव' चरित्र का आशय क्या है?

उ० पाथीटिव' चरित्र का आशय रचनाकार द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले ऐसे चरित्र है जो अपने मनोरथ की पूर्ति में बाधक बनने वाली किसी भी विसंगति या संकट को देख हतोत्साहित नहीं होते। बल्कि वे उनका दमन कर सहज भाव से आगे बढते है समाज ऐसे चरित्रो के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित हो तदनुरूप आचरण करता है इसीलिए इन प्रमुख चरित्रो का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने के लिे कारण 'पाथीटिव' चरित्र भी कहा जाता है

प्रश्न : 5) निम्नलिखित मे से किन्ही दो पर निबंध लिखिए

(i) समय का सदुपयोग : जीवन की सफलता का मूल आधार

(ii) साक्षरता : आवश्यकता, उपादेयता

(iii) राष्ट्रभाषा हिंदी : वर्तमान स्वरूप और समस्याएं

(iv) राजस्थान के प्रमुख पर्व एवं उत्सव

समय का सदुपयोग: जीवन की सफलता का मूल आधार

रूपरेखा

1 भूमिका
2 समय के सदुपयोग का आशय
3 समय के सदुपयोग की विधि
4. समय के सदुपयोग से लाभ
5 निष्कर्ष

1 भूमिका :→

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार उसमे विद्यमान तीन विशिष्ट शक्तियो को माना है जिन्हे उन्होने शक्ति का त्रिकोण कहा है। ये त्रिकोण है - इच्छा ज्ञान और क्रिया मनुष्य अनन्त इच्छाओ का आगार है कभी भी कही भी किसी भी प्रकार की कोई भी इच्छा मनुष्य के अन्तस्थल मे कभी भी जन्म ले सकती है। किन्तु विधाता ने मनुष्य को ज्ञान के रूप मे एक अंकुश, कसौटी या गुरु भी प्रदान किया है किसी भी इच्छा की पूर्ति हेतु तत्पर होने के पूर्व इसका उपयोग किया जाना आवश्यक है क्योंकि ज्ञान जहां इच्छा का मूल्यांकन कर यह निर्देशित करता है कि वह संगत है या नहीं उस, वहीं यह निर्देश भी देता है कि

जब मनुष्य सुविचारित योजना के अनुसार कार्य करता है। किसी समय विशेष में जो संदर्भ (कार्य) साधन की साध्य होते हैं वे दूसरे समय में असाध्य भी बन जाता करते हैं इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति की सफलता में अवसर का बहुत बड़ा हाथ होता है।

२. समय के सदुपयोग का आशय:-

सदुपयोग के दो प्रमुख आशय हैं - समय के प्रत्येक पल का रचनात्मक उपयोग तथा (i) जीवन के उचित अवसर का उपयोग। (ii) प्रत्येक हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि आलस्य समय के सदुपयोग का सबसे प्रबल बाधक तत्व है और तत्परता सबसे प्रबल साधक तत्व।

उक्त संदर्भ को एक सामान्य प्रतीक द्वारा सदुपयोग को समझा जा सकता है रेलगाड़ी - बहुत-से लोगों को लेकर अपने गन्तव्य की ओर रवाना होती है। जिन्हें अपनी मंज़िल तक पहुंचना होता है वे समय से स्टेशन पहुंचते हैं टिकट लेते हैं और निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचकर रेल गाड़ी के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं गाड़ी के आ जाने पर उसमें सवार होते हैं और अपनी मंज़िल पर पहुंचते हैं। परन्तु असावधानी और आलस्य लोग स्टेशन पर पहुंचकर भी या तो ट्रेन में बैठ नहीं पाते या फिर अपने गन्तव्य पर उतर नहीं पाते। कारण यह

है कि ट्रेन किसी का इंतजार नहीं करती, वह अपनी निर्धारित व्यवस्था के अनुसार गतिशील रहती है।

इसीलिए क्रान्तिकारी कवि कबीर ने इस प्रसंग में तो यहां तक कह दिया कि कार्य का पूर्वानुमान लगाकर तत्काल उसकी पूर्णता के लिए सक्रिय हो जाना चाहिए।

काल्हि करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल मे परलै होयगी, बहुरि करैगो कब॥

3. समय के सदुपयोग की विधि :-

प्रत्येक व्यक्ति समाज या संस्थान की कार्य करने की अपनी एक शैली होती है। इसके अनुसार ही लोग सक्रिय होते है। परंतु कुछ सन्दर्भ ऐसे भी होते है जो सभी पर समान रूप से लागू होते है। समय के सदुपयोग का यथार्थ भी ऐसा ही है। इस प्रसंग मे हम एक योजनाबद्ध समय सारणी का उल्लेख कर सकते है। जिसके अनुसार व्यक्ति अपने कृतित्व को योजनाबद्ध तरीके से निर्धारित कर लेता है। फलतः उसके कार्य सहज ही सम्पन्न होते चले जाते है इसके मूल मे यह यथार्थ भी सक्रिय होता है कि व्यक्ति अपने कार्य की सफलता या असफलता का अनुमान सहज ही लगा लेता है। फलतः उसके अंतर्मन मे संघर्षशीलता एवं मनोबल का

तेल निरन्तर प्रबल करता रहता है। अतः यह आवश्यक है कि जिस प्रकार लक्ष्य-काल के दौरान अर्जुन की तन्मयता की अवस्था में केवल अपना लक्ष्य प्राप्ति ज्ञात होता था। उसी प्रकार व्यक्ति को अपने उद्देश्य की साधना के दौरान केवल अपना उद्देश्य ही दृष्टिगत होना चाहिए इधर-उधर के प्रपंचों में फसने से न केवल व्यक्ति की संघर्षशीलता प्रभावित होती है बल्कि कभी-कभी उसकी सफलता भी असफलता में परिवर्तित हो जाती है समकालीन वैज्ञानिक युग में तो पलभर क्षण विलम्ब।

4. समय के सदुपयोग से लाभः—

लक्ष्य प्राप्ति या उद्देश्य की सहज सिद्धि से बढ़कर आकांक्षा की किसी के जीवन की शायद ही कोई लालसा हो। समय के सदुपयोग से ऐसा सहज ही सम्भव हो जाया करता है इसमें कोई संदेह है कि व्यक्ति में विविध इसी कारण प्रत्येक अध्यवसायी व्यक्ति सुख, शान्ति और आनन्दपूर्ण जीवन व्यतीत करता है विशेषकर वे जो अपना कार्य समय की हकीकत को देखते हुए एक व्यक्ति कार्यक्रम के अनुसार सम्बन्ध किया करते हैं। पश्चिमी देशों की वर्तमान सफलता के मूल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कठोर परिश्रम, योजनाबद्ध सक्रियता प्रभृति सद्गुणों के साथ-साथ एक एक पल के सदुपयोग की भी महती भूमिका है इसके

विपरीत जीवन के अन्य बहुत - से संदर्भ असीमित हैं इनमें से बहुतों को खोकर पुनः पाया जा सकता है, परन्तु समय को कदापि नहीं। अतः समय का अपव्यय है जिसकी पूर्ति सर्वथा असम्भव है। इसीलिए किसी मनीषी ने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि - आलस्य हि मनुष्याणाम् शरीरस्थो महान रिपुः। यह ध्यान रखना चाहिए कि समय के सागर में ज्वार-भाटा नहीं होता अपनी जीवन - नौका को संघर्ष श्रम और सुनियोजित कि पतवार के सहारे जितना गतिशील बनाता है उसका जीवन उतना उपलब्धियों के आने से ही विशिष्ट बनता जाता है यह उक्ति इसी गाथा से होकर आगे बढ़ती है जिसके अनुसार कथन यथार्थ का समर्थन करती है जिसके अनुसार कदम चूम लेती है आकर के मंजिल मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न करे।

5 निष्कर्ष :-

मनुष्य अपनी मूल प्रकृति मे सुख - शांति का चहेता है। आनन्द उसकी सबसे बड़ी चाहत होती है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब मनुष्य वांछित समस्त योजनाए सहज की पूरी हो जाया करे। इसमें संदेह नहीं है कि मनुष्य मे असीमित क्षमताए है प्रकृति की एक एक बाधा को नत मस्तक कर अपने निरंतर के इसका परिचायक दिया है। आज निरंतर उसकी श्रेष्ठता का डंका बज रहा है। अतः

DATE

क्षमताओं का सुनियोजित एवं सार्थक उपयोग किया जाय तो उसे व्यापक सफलताएं सहज ही मिल सकती है हर सहज व्यक्ति उसका एक उपयुक्त उदाहरण माना जा सकता है विश्वव्यापी संगठन की भारतीय इकाई भारत स्काउट एण्ड गाइड में प्रातः काल (प्रभाती के रूप में) गाया जाने वाला निम्न पंक्तियों इसी यथार्थ की घोषणा सी करती है

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है।

अतः यह निर्विवाद सत्य है कि समय का सदुपयोग जीवन की सफलता का मूलाधार है

राजस्थान के प्रमुख पर्व एवं त्योहार

रूपरेखा

1. भूमिका
2. राजस्थान के प्रमुख पर्व / त्यौहार
3. राजस्थान के प्रमुख उत्सव / मेले
4. पर्वों एव उत्सवों से होने वाले लाभ
5. उपसंहार

DATE ....

भूमिका :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है यह उसकी विशेषता भी है और विवशता भी अपनी इस सामाजिकता को मजबूत और जीवंत बनाए रखने के लिए उसने अनेक उद्यम किए है जहां कुछ पर्व एवं उत्सवों का आयोजन उल्लेखनीय है। जहां पर्व एवं उत्सव पौराणिक एवं धार्मिक संदर्भो से जुड़े होने के कारण सार्वभौमिक स्वरूप धारण कर चुके है वही बहुत से ऐसे भी जो स्थानीय मान्यताओं पर आधारित है इनके आयोजन के पीछे कोई न कोई आस्था, मान्यता या दृष्टिकोण छिपा होता है।

राजस्थान की धरती उक्त दृष्टि से उर्वर एवं सम्पन्न धरती है यहां के जीवन - दर्शन को अपनी अलग ही छवि है जो यहां के विविध आयोजनों मे स्पष्ट होकर प्रति भासित होती है यद्यपि यहां के नगरीय जीवन पर आधुनिकता का प्रभाव बहुत तेजी से पड रहा है। परन्तु यहां का ग्रामीण परिवेश उक्त प्रभाव से अभी भी बहुत - कुछ अछूता है।

2. राजस्थान के प्रमुख पर्व / त्यौहार :- राजस्थान मे दशहरा, दीवाली एवं होली सदृश राष्ट्रीय स्तर

पर आयोजित होने वाले पर्व है परन्तु इस राज्य के अपने पर्व भी है जो बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाए जाते है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान की सीमा गुजरात, पंजाब, हरियाणा उत्तरप्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्य की सीमाओं को स्पर्श करती है फलतः इनके निकटवर्ती क्षेत्रों मे डांडिया, घूमर, बैसाखी, रामलीला रासलीला प्रभृति पर्व बड़े उत्साह के साथ आयोजित किये जाते है साथ ही यहा के अपने पर्वो मे श्रावणी तीज, गणगौर, वास्योड़ा और आखातीज, उल्लेखनीय है। गर्मी की तपन के उपरांत वर्षा की फुहारे पड़ते ही मरुधरा का समूचा परिदृश्य बदला - सा जाता है ऐसे ही मरुधरा मे यहां के लोग अपनी खुशी को व्यक्त करने के लिए 'श्रावण तीज' के पर्व को माध्यम बनाते है तीज एवं चौथ के दिन प्रायः प्रत्येक गाँव के बाहर किसी सार्वजनिक स्थान - तालाब व मंदिर आदि पर सामूहिक आयोजन होते है बड़े कस्बो एवं शहरो मे तीज माता की सवारी निकाली जाती है यह पर्व इस लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहा श्रावणी तीज ही विविध पर्वो के आयोजन का सिलसिला शुरु होता है जो गणगौर तक चलता है।

भारतीय मान्यता में पति-पत्नी के संबंध को
शाश्वत संबंध के रूप में देखती है शिव
पार्वती के युगल को इस संदर्भ में आदर्श
युगल माना गया है। कुमारी कन्याएं इनसे
इनकी उपासना कर योग्य-वर की प्राप्ति
का आशीष मांगती है वही विवाहित महिलाएं
अखण्ड सौभाग्यवती होने का। राजस्थान
में आस्था का यह पर्व गणगौर के रूप
में आयोजित होता है यह त्योहार चैत्र
मास के प्रथम दिवस को आरम्भ होकर
चैत्र सुदी 4 तक कुल 18 दिन चलता है।
तक निरन्तर उपवास रखती है यह व्रत
समाप्त होता है जब इनके द्वारा तेऊजणी
कर दी जाती है।

राजस्थान के प्रमुख पर्वों के अन्तर्गत
शीतलाष्टमी एवं आखातीज भी अपना
विशेष महत्व रखते है शीतलाष्टमी जिसे
बास्योड़ा भी कहते है चैत्र वदी 8 को मनाया
जाता है यह पर्व इस देश के लोगों के
वैज्ञानिक ज्ञान या दृष्टिकोण का परिचायक
है।
वैशाख शुक्ल तृतीया को आयोजित होने
वाला आखातीज का त्योहार प्रायः सम्पूर्ण
राजस्थान में बड़े उत्साह के साथ मनाया
जाता है। यह मूलतः किसानों का त्योहार

है जो नयी फसल के स्वागत के रूप में मनाया जाता है ग्रामीण परिवारों में विवाह के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त मुहूर्त माना जाता है ग्रामीण परिवारों में विवाह के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुहूर्त इसलिए माना जाता है क्योंकि इस दिन शकुन - अपशकुन आदि का विचार करने की कोई आवश्यकता ही नही होती इसलिए इस दिन बहुत बड़ी संख्या में विवाह सम्पन्न होते है।

3 राजस्थान के प्रमुख उत्सव एवं मेले:

राजस्थान के लोगों अत्याधिक आस्थावादी भी रहे है यही कारण है कि इस प्रांत में सर्वत्र तीर्थ स्थल एवं ऋषि - मुनियों की साधना - स्थलियाँ विराजमान है इसमे अनेक प्रसिद्ध पौराणिक स्थल है यहाँ के अधिकांश मेलो एवं उत्सवों का आयोजन इन्ही से जुड़ा हुआ है। इन मेलों के साथ प्रायः पशु भी मेले भी आयोजित होते है जिनकी परम्परागत भारतीय कृषि व्यवस्था के अन्तर्गत महती भूमिका रही है। इसमे पुष्कर, तिलवाड़ा, परबतसर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, गोगामेड़ी, रामदेवरा, केसरियानाथ

DATE

श्री नाथ जी, राणीसती, ओकेश्वर, बाणगंगा केलवाड़ा प्रभृति मेले उल्लेखनीय है अजमेर वाले ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का उर्स अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति रखता है।

4. पर्वों एवं उत्सवों से होने वाला लाभः-

इनके आयोजन से होने वाला सबसे बड़ा लाभ यह है कि इनके माध्यम से सांस्कृतिक मान्यताएँ एवं आदर्श सुरक्षित रहते है धार्मिक आस्था से जुड़े हुए आदर्श कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होते है। क्योंकि ये न केवल मानव मूल्यों की रक्षा करते है बल्कि व्यक्ति की जीजीविषा को निरन्तर जीवन बनाकर उसे हताशा या निराशा से भी मुक्त रखते है अतः व्यक्ति की अमानवीय हरकतें अवरुद्ध हो जाया करती है। पूर्व मे इन मेलों का इसी कारण विशेष महत्त्व था किंतु अब स्थान-स्थान पर बाजारों के विकास के कारण वस्तु संग्रह की प्रवृति शिथिल पड गयी है। लेकिन आज भी ये मेले अस्तित्व बने हुए है क्योंकि परिवेश के साथ इनका बदलता हुआ स्वरूप इनकी प्रासंगिकता की रक्षा कर रहा है। लेकिन इनके आयोजन के साथ अनेक विसंगतियाँ भी जुड गयी है।

DATE

यातायात व्यवस्था, नकली सामानों की समाजकंटकों की अनैतिक गतिविधियां एवं कभी कभी आयोजकों को दुर्व्यवहार भी इसी क्रम में उल्लेखनीय बाधाएं है। प्रशासनिक स्तर पर थोड़ी सी सावधानी बरतने से इनमें पर्याप्त सुधार हो सकता है।

5 उपसंहार :- जिंदगी की सार्थकता उसे सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीने में है ऐसा तभी सम्भव है जब लोग व्यष्टिवादी मानसिकता से मुक्त होकर समष्टिवादी दृष्टिकोण अपनाए और एक-दूसरे के सुख दुख के सहभागी बने पर्व एवं उत्सवों का आयोजन इसका संयोग प्रस्तुत करता है राजस्थान के लोग आरम्भ से ही अपनी जिंदादिली के लिए विख्यात रहे है अतः यहां के पर्व एवं उत्सव अपना अलग ही महत्व रखते हैं। पाश्चात्य जीवन - दर्शन हमारी संस्कृति को जिस प्रकार कुत्सित कर रहा है उससे सभी चिंतित हैं। अतः ये हमारे लिए आज भी न केवल प्रासंगिक है बल्कि उपादेय भी है।

Teacher's Signature